✡ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ✡

❀ श्रीमते भगवते रामानन्दाचार्याय नमः ❀

।। श्रीहनुमते नमः ।।

।। श्रीसद्गुरवे नमः ।।

।। श्रीमती चन्द्रकलायै नमः ।।

।। श्रीमती चारूशीलायै नमः ।।

श्रीसीताराम उत्कण्ठा प्रकाश

ध्यान मंजरी, उज्जवल उत्कण्ठा,
जुगलोत्कण्ठा प्रकाशिका, विनय चालीसी,
नेह प्रकाश, सन्त विनय शतक

प्रकाशकः—
वैदेही बल्लभ शरण जी
श्रीहनुमानबाग, वासुदेवघाट, श्रीअयोध्याजी

प्रथम बार १०००) सन् २००० (मूल्य १२ रुपये

श्रीप्रीतम की प्यार

कौन हरीनाथ ने अवसर दिया सबकार नया।
हम नये आप नये नेम नया प्यार नया ॥१॥

हमसे कहलाय लिये दोष हमारे सारे।
ईश शक्ति का ये दिखलाया चमतकार नया ॥२॥

अपने सेवक के कसूरों पै उठाया खुद कष्ट।
हाय ईस लाज से है दिल पर मेरे खार नया ॥३॥

सब दिन प्यार दुलारों का नही वारा पार।
रोज पर सादि पिन्हाते हैं गले हार नया ॥४॥

हो नही सकते उऋन तौ भी न्यवछावर करके।
करोड़ो देह जो देवै मुझे करतार नया ॥५॥

मीठि बोलि पै मैं कुरवान मेरा तन मन धन।
प्यारी चितवन पै मेरा दिल है गिर्फतार नया ॥६॥

जिस कसूरों को सजा देना मुझे वाजीब थी।
उसके बदले में दिया मोद नया प्यार नया ॥७॥

ईश कोटि में भी देखे न सुनै ऐसे गुण।
नाथ मैं जैसा हर एक गुण है सुख सार नया ॥८॥

यहै अभिलाष सदा पूर्ण करैं सीताराम।
कीजिये लाखो वर्ष तक मेरा रीझवार नया ॥९॥

रहै तन मन मेरा सब नाथ की रुचि अनुकुल।
(युग्म) निविहैं सिया नाथ सो एक प्यार नया ॥१०॥

॥ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥

❀ श्रीमते भगवते रामानन्दाचार्याय नमः ❀

॥ श्रीहनुमते नमः ॥ श्रीसद्गुरवे नमः ॥

॥ श्रीमती चन्द्रकलायै नमः ॥ श्रीमती चारुशीलायै नमः ॥

श्रीसीताराम उत्कण्ठा प्रकाश

(ध्यान मंजरी, उज्जवल उत्कण्ठा, जुगलोत्कण्ठा प्रकाशिका
विनय चालीसी, नेह प्रकाश, सन्त विनय शतक)

प्रकाशक:—
वैदेही बल्लभ शरण जी
श्रीहनुमानबाग, वासुदेवघाट, श्रीअयोध्याजी

गुरू पूर्णिमा के शुभावसर पर १६ जुलाई २०००

पुस्तक प्राप्ति स्थान:—
वैदेही बल्लभ शरण जी
श्रीहनुमानबाग, अयोध्याजी

श्री वैदेही शरण जी
अवधेश वस्त्रालय, कटारी मन्दिर
नयाघाट, अयोध्याजी

म० श्री मैथिलीरमणशरणजी
श्रीलक्ष्मण किला, अयोध्याजी

॥ श्रीसीताराम चन्द्राभ्यां नमः ॥

॥ श्रीमते हनुमते नमः ॥

॥ श्रीमते भगवते श्रीरामानन्दाचार्याय नमः ॥

॥ श्रीसद्गुरू चरुण कमलेभ्यो नमः ॥

तत् पद वाच्य राम सिय, दिव्य रसन्ह की खान।
जाके रस कण लहि, व्रह्मादिक रसखान ।१॥
अन्तर्यामि राम सिय, दिव्य सच्चिदानन्द।
प्रणतन्ह अपनाय के, करत केलि सुख कन्द ॥२॥

रसस्वरूप रससिन्धु श्रीसीतारामजू के अनुकुल कृपा दृष्टि स्वरूप आचार्यों की महामधुर रसमयी वाणियोंके देखने, स्पर्श करने तथा श्रवण करने से पाप हरता, कर्मनाशक, मोहरूपी रात्रि का नाशक है। जो श्रद्धालु हृदय में सनेह पूर्वक धारण करते हैं उसके हृदयाकाश में स्वस्वरूपाभिमान रूप सूर्योदय होता है। जो कि कोटि जन्मों के कोटि योग, यज्ञादि कर्मो से दुर्लभ है। भगवत नाम, रूप, लीलाधाम ये प्रकृतिसे (इन्द्रिय सुखानुभूति) परे है सच्चिदानन्द विग्रह है। जो श्रद्धालु इन्द्रिय संयम पूर्वक शरणागति स्वीकार करता है उसके हृदय अज्ञान को नाश कर बुद्धि योग प्रदान कर अपना अनुभूति देते है। ऐसे सहजानन्द भजन प्रायण सन्त शिरोमणि श्रीमद्अग्रदेवाचार्य जी, श्रीमद्युगलानन्यशरणजी, श्रीमद्शुभशीलाजी, (श्रीसीता-रामशरणजी) श्रीमद्रूपालताजी, श्रीमद्बालअलीजीके वाणियों की संग्रह है।

तीनकाल, चारयुग में एकमात्र निर्हेतुक परम हितकारी इस दुस्तर संसारमें भगवान एवं भगवान के भक्त, सन्त ही है।

"हेतु रहित जग जुग उपकारि ।
तुम तुम्हार सेवक असुरारि ॥"

ऐसे ही परम हित की चाहना वाले भगवत् भक्त, सन्त श्रीवैदेही बल्लभ शरणजी, श्रीहनुमानबाग, श्रीअयोध्याजी ने महामधुर, रसमयी अचार्यो की वाणियों को वर्षों से प्राणवत जोगाकर रखा था । जो आज श्रीसीताराम जू की कृपाकांक्षि श्रीमान् म० सरयूशरणजी इटावाधाम, श्रीमान् रघुपतिशरणजी टाण्डा, श्रीसीताराम लोहाटी, आसाम, शिवसागर ने सादर सप्रेम पूर्वक छपाईमें सहयोग कर धन्य के पात्र हुए । श्रीवैदेही बल्लभ शरणजी ने कृपा कर (प्रूफ) का कार्य सौपकर अनुग्रहीत किया । यथाशक्ति मैंने संशोधन किया, भूल से अशुद्धि को सुधार कर पढ़ने की कृपा करेंगे ।

रामस्य नाम रूपं च लीला धाम परात्परम् ।
एतच्चतुष्टयं नित्यं सच्चिदानन्द विग्रहम् ॥

संशोधक-

रामदास

श्रीहनुमानबाग, अयोध्याजी

❋ विषय-सूची ❋

।। श्रीसीताराम चन्द्राभ्यां नमः ।।
।। श्रीमती सर्वेश्वरी चन्द्रकलायै नमः ।।
।। श्रीमते हनुमते नमः ।।

* ध्यान मंजरी *

-: छन्द रोला :-

सुमिरौं श्रीरघुबीर धीर रघुबंश विभूषण।
शरण गहे सुखराशि हरत अघसागर दूषण ।। १

सुन्दर राम उदार वाण कर सारँग धारी।
हियधरि प्रभु को ध्यान बिदुषजन आनंद कारी ।। २

अवधपुरी निज धाम परम अति सुन्दर राजै।
हाटकमणियम सदन नगन को कांति बिराजै ।। ३

पौंरि द्वार अति चारु सुहावन चित्रित सोहैं।
चंपतार मंदार कल्पतरु देखत मोहैं ।। ४

भवन भवन चित्राम चित्र की रंभा सोहैं।
बनज सुतन की पाँति कांति गोखनमग जोहैं ।। ५

तोरण केतु पताक ध्वजा तहँ परम सोहाई।
मनो रघुवर हित करन आय त्रिभुवन छबि छाई ।।६

बीथी बगर बजार रतन खँचि ज्योति उजासा।
रहन न पावै तिमिर सहज ही होत प्रकाशा ।। ७

देखि पुरी छवि भरी मध्य के अटकत रथ रबि ।
हरषहिं बरषहिं सुमन बिबुध जन निरखि पुरीछबि ॥८
श्रीरघुवर यश भरी पुरी बर-बर की दायन ।
धर्मशील नर नारि सबै प्रभु सुयश परायन ॥ ९
गावत रघुबर चरितमिलतजित तितते भामिनि ।
स्वरअसकोकिल नादरूपजनुदमकति दामिनि ॥१०
तिन युवतिन को भाग बरनि कापै कहि आवैं ।
सचि सारद नगसुता देखिकै मन ललचावैं ॥ ११
अवधपुरिन की अवधि यही श्रुति संमृति बरणी ।
ध्यान धरे सुखकरनि नाम उचरत अघहरणी ॥ १२
करि-करि बहुत कलेश कहत उपमा जो गुणीजन ।
अन्य उक्ति सब अल्प अवध सम अवध भले बन ॥१३
वापी कूप तड़ाग रतन सोपान बनाए ।
रहे अमल जल पूरि बिकसि कल्हार जु छाए ॥ १४
शीतल तरुकी छाँह विहँग कूजत मन भाये ।
चहूँ ओर आराम लगत उपवन जु सुहाये ॥ १५
तिनपर केकि कपोत कीर कोकिल किल कारत ।
सुरधरि तिनकी देह मनोप्रभु सूयश उचारत ॥ १६

झूमि रहे लगि डार भार फल फूलन भारी ।
पथिक जनन फल देन मनहुँ तिन भुजा पसारी ।।१७
निकटहिं सरयू सरित धरे अस उज्वल धारा ।
भवसागर को तरण विदित यह पोत उदारा ।। १८
हरण पाप त्रय ताप जनन चिंतित फलदेनी ।
सुकृती जन आरोह सुदृढ़ बैकुण्ठ निसेनी ।। १९
तीर नरनकी भीर लगत अस परम सुहाए ।
मनहुँ ब्योम को त्यागि अमर गण सेवन आए ।।२०
करैं जो मज्जन पान धन्य बड़ भाग जनन के ।
बिबिध भांतिके घाट तहां मन थकित मुनिन के ।।२१
नीर परम गम्भीर चलत गहिरे स्वर गाजैं ।
तहाँ तीर बहु सघन कमल अति सुन्दर राजैं ।।२२
कमल-कमल के मध्ययूथमिलि भँवर गुंजारैं ।
मानहुँ मुनिजन बृन्द वेद ध्वनि शब्द उचारैं ।।२३
त्रिबिध बयारिबहार बहुत निशदिन अघहारी ।
शींतल मंदसुगंध परम अति आनंदकारी ।।२४
बोलत चकवा कुण्डतीर मनमोद बढ़ावैं ।
मानहुँ परम सुदेश निकरमिलि गंधर्व गावैं ।।२५
कानन तहाँ अशोक शोक तेहि देखत भाजैं ।
बिबिधि भाँति के बृक्ष सबै बृन्दारक राजैं ।।२६

साखा पत्र अनूप कहा कहौं शोभा उनकी ।
फल कुसुमन के झुंड निरखि सुधिरहति न तनकी ।२७
कल्पबृक्ष के निकट तहां यकधाम मणिन युत ।
कंचनमय सब भूमि परम अति राजत अद्‌भुत ।।२८
स्वर्ण वेदिका मध्य तहां यक रतन सिंहासन ।
सिंहासन के मध्य परम अति पदुम शुभासन ।।२९
ताके मध्य सुदेस कार्णिका सुन्दर राजै ।
अति अद्‌भुत तहँ तेज बह्निसम उपमाभ्राजै ।।३०
तामधि शोभित राम नीलइन्दीवर ओभा ।
अखिल रूप अंभोधि सजल घन तन की शोभा ।।३१
शिर पर दिव्य किरीट जटित मञ्जुल मणि मोती ।
निरखि रूचिरता लजितनिकर दिनकरकी जोती ।।३२
कुण्डल ललित कपोल जुगल अति परम सुदेशा ।
तिनको निरखि प्रकाश लजित राकेश दिनेशा ।।३३
मेचक कुटिल सुकेश सरोरुह नयन सुहाए ।
मुख पंकज के निकट मनहुँ अलि छौना आए ।।३४
भृकुटी त्रयपद दुगुन मनहुँ अलि अवलि बिराजै ।
नासा परम सुदेश बदन लखि पंकज लाजै ।।३५
चितवनि चारु कृपाल रसिक जन मन आकर्षत ।
मन्दहास मृदुबयन जनन को आनंद बर्षत ।।३६

दीरघ दीप्त ललाट ज्ञानमुद्रा दृढ़ धारी।
सुन्दर तिलक उदार अधिक छबि शोभित भारी॥३७
परम ललित मणिमाल हार मुक्ता छबि राजै।
उरश्रीवत्स सुचिन्ह कण्ठ कौस्तुभ मणि भ्राजै ॥३८
यज्ञोपबीत सुदेश मध्यधार जु बिराजै।
उभय भुजा आजानु नगन जटि कंकन राजै ॥३९
चूनी रतन जराय मुद्रिका अधिक सँवारी।
शोभित अद्भुतरूप अरुणकी छबि अनुहारी ॥४०
भूषण बिबिध सुदेश पीत पट शोभित भारी।
लसतकोर चहुँओर छोर कलकञ्चन धारी ॥४१
रोमाबलि बनि आई नाभि अस लगति सुहाई।
त्रिबलीतामधिललित रेखत्रयअति छबिछाई। ४२
कटिपरदेश सुढार अधिक छवि किंकिनिराजै।
जानुपुष्टबनि गूढ़ गुल्फअतिललित बिराजै ॥४३
नूपुर पुरट सुचारु रचित मणि माणिक सोहैं।
रवकल सुरसंगीत सुनत परिजन मन मोहैं ।।४४
युगल अरुण पद पद्म चिन्हकुलिशादिकमंडित।
पद्मा नित्यनिकेत शरणगत भवभयखंडित ॥४५

दक्षिण भुज शर सुभग सुहावन सुन्दर राजैं ।
दिव्या युध सुबिशाल बामकर धनुष बिराजैं ।।४६
षोडशबरष किशोर राम नित सुन्दर राजैं ।
रामरूप को निरखि बिभाकरकोटिकलाजैं ।४७
अस राजत रघुवीर धीर आसन सुखकारी ।
रूप सच्चिदानन्द बामदिशि जनक कुमारी ।।४८
नगन जरे छबि भरे बिबिध भूषण अस सोहैं ।
सुन्दर अंग उदार बिदित चामी कर कोहैं ।।४९
अलक झलकता श्याम पीठ शोभित कलबेनी ।
सुन्दरता की सींव किधौं राजति अलिश्रेनी ।।५०
रचित सुबिबिध प्रकार माँग जरतारसवांरी ।
मनहुँ सुरसरी धार बनी शोभा अस भारी ।।५१
पाटनकी लर और बड़े-बड़े उज्वल मोती ।
सघन तिमिरके मध्य मनो उड़गणकी जोती ।।५२
रतनरचित मणिजटित शीसपर बिन्दाछाजैं ।
ललित कपोल सुयुगल कर्ण ताटंक बिराजैं ।।५३
उज्वल भालसुचारु अमितउपमा अस सोहैं ।
राजत परम सोहाग भागको भवन किधौं हैं ।।५४

गोरो चनको तिलक ललित रेखा बनिआई ।
उन्नत नासा सुभग लसत बेसरि जु सुहाई ।।५५
भृकुटी नयनबिशाल सौम्य चितवनि जगपावन ।
मानहुँ बिकसित कमलबदन असलगत सुहावन ।।५६
अरुणअधर तरदशन पांति असलगति सुहाई ।
चारुचिबुकबिच तनकबिन्दु मेचक छबिछाई ।।५७
कण्ठपोति मणिजोति सुछबि मुक्ताबरमाला ।
पदिकरचितकलधौत बिराजत हृदय बिशाला ।।५८
हेमतंतु कर रचित अरुण सारी रँग झीनी ।
कंचुकिचित्रितचतुर बिबिध शोभित रँग भीनी ।।५९
वरअंगद छविदेति बाहु अस लगति सुहाई ।
करन चुरी रंगभरी ललित मुँदरी बनि आई ।।६०
पद्मराग मणि नील जटित युग कंकणराजैं ।
मनहुँ बनज के फूल द्विरेफनि पंक्ति बिराजैं ।।६१
लहँगा कटि परदेश भाँति अतिशोभित गहरी ।
अरुण असितसित पीत मध्य नाना रंगलहरी ।।६२
हरित नगनकर जरित युगल जेहरि असराजैं ।
तिनतर घुँघुरू और अग्र बिछियाजु बिराजैं ।।६३

तिन पर नगजुअमोल ललित चूनी गणलाए।
चरण चारुतल अरुण सहज ही लगत सुहाए ॥६४
अतुलित युगल स्वरूप केवन असउपमा जिनकी।
जेतिक उपमादीप्त शक्तिकरि भासित तिनकी ॥६५
यहि बिधि राजत राम अवधपुर अवध बिहारी।
दम्पति परम उदार सुयश सेवक सुखकारी ॥६६
दक्षिण भुज रिपुदलन गौर तन तेज उदारा।
उभय हेतु अनुसार धरे ब्रत खंडित धारा ॥६७
शेष लिए कर छत्र भरत लिए चौंर ढुरावैं।
अनिल सुवनकर जोरिसु प्रभूकी कीरतिगावैं ॥६८
अपनी-अपनी ठौर नित्य परिकर बनि भारी।
सुरति शक्तिबिमलादि रहतनित आज्ञाकारी ॥६९
जो जो जेहि अधिकार सचिव सेवा मनबासैं।
बीनाधर सुरतान गानकरि प्रभुहि उपासैं ॥७०
यही ध्यान उरधरैं स्वयंतन सुफल करेवा।
भव चतुरानन आदि चरन बन्दै सब देवा ॥७१
यह दम्पतिबर ध्यान रसिकजननितप्रतिध्यावैं।
रसिकबिना यह ध्यान और सपनेहुँ नहिं पावैं ॥७२

अमल अमृत रसधार रसिकजन यहिरस पागैं।
तेहिको नीरस ज्ञान योग तप छोई लागैं ।।७३
परमसार यह चरित सुनत श्रवन अघहारी।
ध्यान परम कल्यानसन्त जन आनंदकारी ।।७४
तिन्हैं भूलि जनि कहौ कुटिलता पंक मलिनमन ।
यह उज्वल मणिमाल पहिरिहैं परम रसिकजन ।।७५
जगत ईशको रूप बरणि कह कवन अधिकमति ।
कहाँ अल्प खद्योत भानुके निकट करै द्युति ।।७६
कहँ चातक की शक्ति अखिल जलचोंच समावै ।
कछुक बुन्द मुख परैं ताहिलै आनन्द पावै ।।७७
सुनि आगम बिधि अर्थ कछुक जो मनहि सुहायो ।
यह मंगल कर ध्यान यथा मति बरणि सुनायो ।।७८
श्रीगुरु सन्त अनुग्रहते अस गोपुर बासी ।
रसिक जनन हितकरन रहसियहताहि प्रकाशी ।।७९
ध्यान मञ्जरी नाम सुनत मन मोद बढ़ावैं ।
श्रीरघुवर को दास मुदितमन अग्रसोगावै ।।८०
इति श्री स्वामी अग्रदास जी कृत हयामंजरी ।

ध्यान मंजरी सम्पूर्णः

उज्ज्वल उत्कण्ठा-विलास

नामोत्कण्ठा

॥ दोहा ॥

श्रीसुषमा-मुदमोदनिधि, सब विधि रिधि-सिधि-दानि ।
बन्दौं बोध विचित्र, बरदायक गुर गुणखानि ॥ १

मंगल-मोद-प्रमोद मृदु मूल बचन प्रिय पाय ।
पदम-पराग प्रणम्य नित रच्यो रहस दुतिदाय ॥ २

श्रीसीता वल्लभ बिमल विरद निवास सुखैन ।
बन्दौं श्रीशितकंठ-पद अमल कमल मुद दैन ॥ ३

श्रीगणनायक गुणनिकर गिरा-ज्ञान गतिदानि ।
बन्दौं बाग विचित्र वर बीज युगल रसखानि ॥ ४

श्रीसिय-पिय-परिकर परम प्रेम प्रमोद-निवास ।
चरन-नलिन नूतन नमो पूरक उर-अभिलाष ॥ ५

उर-उमंग पूरन करन हिय-आभरन विचित्र ।
बन्दौं सिय-पिय-पदपदम सदन सुराग पवित्र ॥ ६

उज्वल उत्कण्ठा सुमन सन्तन सब विधि होत ।
कौन सुदिन दुति होत मम शुचि रुचि होत उदोत ॥७

नाम-रूप-गुन--धाम श्रीलीला ललित रसाल ।
कबहुँ बिपुल प्रिय लागिहैं जिमि जीवन जड़ जाल ॥८

श्रीसियवर-प्रेरित हृदय बरनौं बिसद बिलास ।
उज्वल उत्कण्ठा सरस सुनत प्रीति प्रतिकाश ।। ९

नाम-रूप-गुण-धाम-वसु-याम-विभव - वरवास ।
उज्वल उत्कण्ठा कलित वलित उछाह हुलास ।।१०

सुजन सनेही समुझिहैं शौक समेत सुबैन ।
रुच्छ तुच्छ किमि लखि सकै सिय-जीवन गुन-ऐन ।।११

बढ़ै बिना अभिलाष हिय हरित मनोहर कान्ति ।
कोटिन किये कलेश तउ नहिं सनेह - रस - यान्ति ।।१२

मनोराज युग भाँति शुचि अशुचि विचारि अचित्त ।
मोदामोद - प्रदानि वित विदित प्रकर्ष निमित्त ।।१३

ताही हेतु सचेत चित अहित वासना - बीज ।
विलप किये ध्यावहिं धवल नाम स्वरूप अतीज ।।१४

वृथा बतकही व्योम वन बूझि बिसारि बिशेष ।
प्रतिपल उत्कण्ठा अमल सजत सुमन वरवेष ।।१५

लोक शोकमय मान कहँ मानि महा मलखानि ।
नाम-रूप-गुण मन मनन सकल स्वच्छ रस छानि ।।१६

विसद दिवस ह्वैहैं कबहुँ जग-जंजाल जलाय ।
रसना रटिहौं नाम सिय-राम सुहिय हुलसाय ।।१७

घनसम गिरा गंभीर धुनि पुनि-पुनि प्रेम बढ़ाय ।
जपिहौं जीह अनीह ह्वै करन कलंक कढ़ाय ।।१८

लोक-वेद-बन्धन बिपुल विरस बिचारि विसारि ।
जपिहौं जीवन नाम वसु याम मनादिक वारि ।।१९

नवल नेहनिधि नाम मधि मीन समान सुलीन ।
रहिहौं हाय हिराय हिय हरसायत पन पीन ।।२०

महा मधुरता नाम सुखसागर रसना चाखि ।
भुक्तिमुक्ति-अभिलाष तृन-राख मानिहौं राखि ।।२१

बार-बार रसना सरस कब दैहौं उपदेश ।
रटि रमिये निज नाम-गुन-धाम-सहित आवेश ! २२

श्रीकरुणानिधि-नामगुण श्रवण समेत उछाह ।
पल-पल प्रति करिहौं कबहुँ छोड़ि-छाड़ दिल-दाह ।।२३

पलक पाव बिछुरत कबहुँ प्रान परम प्रियनाम ।
हाय हजारन हिय कबहुँ करिहौं गुनि गुन-ग्राम । २४

श्रीसद्गुरु-सतसंग रंग-राग-सदन ढिग जाय ।
कब सुनिहौं निज नाम-गुन नेह-निशान बजाय ।।२५

नामरटन करिहौं कबहुँ जिमि सरिता वरवेग ।
किये कदंब कलेश नहिं नेक निरोध सुनेग ।।२६

नाम मधुर रसना रटन चातक सम पन ठानि ।
करिहौं त्रिविध कलेश सहि चहि सुबुन्द रसखानि ।।२७

श्रीसीतावर-नाम विन विविध बतकही धूल ।
कबहुँ जानि मन मानिहौं महामोद प्रतिकूल ।।२८

सुदिन सुखद ह्वैहैं कबहुँ रसना रटन अखण्ड ।
विसद वरन नृप एकरस करिहौं होय उदण्ड ।।२९

वचन-रचन पोषन वपुष कारन हिरस हिराय ।
नाम-नेह-निधि जप सजग सजिहौं सुमन थिराय ।।३०

जेहि जन जीह जगामगित नाम लोक अभिराम ।
तेहि पद-पंकज पांसु प्रिय कब पुजिहौं निष्काम ।।३१

लोक-रंजना-ईखना त्रिविध वासना टारि ।
रमि रहिहौं कब नाम सुख सदन अपनपौ वारि ।।३२

मान-प्रतिष्ठा विखम विख-भार बिकार बिसारि ।
रटिहौं रसना रमन निधि नाम महामुद धारि ।।३३

नाम परत्व-प्रकाश कर सन्त रसिक पद पास ।
कब रहिहौं मद-मान-बिन छिन प्रति प्रीत-प्रकाश ।।३४

बीज बृक्ष वत वेद विधि विविध बीच वरनेश ।
मनन संवलित जोहिहौं हृदय हरखि वरवेश ।।३५

सदन कुटुंब उपाधि बहु व्याधि विषम अनुमानि ।
तृनसम तजि जपिहौं सुधासिन्धु नाम पन ठानि ।।३६

दशा देखि दृग दिल जगत जग-मग सरुग सुजानि ।
हालाहल-सम निदरि तेहि रमि रहिहौं रसखानि ।।३७

खान-पान-सनमान-तिय-तनय बिकार बिचारि ।
रटिहौं नाम निसंक मन अतन हिराय सुखारि ।।३८

बार-बार धिक धूल गुनि लोक-लाज खरखाज ।
नाम-सनेह सजाइहौं करि उज्वल मनुराज ।।३९

बिजन विपिनिवर वास सजि तजि तमत्रिगुनितसंग ।
रटिहौं नाम अकाम मन विपुल बढ़ाय उमंग ।।४०

नाम मनोहर मोदप्रद कलित कूक सुनि कान ।
ह्वैहैं कबहूँ मन वपुष विवस समान महान ।।४१

बाहर भीतर करन कुल नाम माझ करि लीन ।
अमनस ह्वै रहिहौं कबहुँ निदरि वासना झीन ।।४२

सिय-जीवन-अनुराग-घन नाम सनेहिन साथ ।
कबहुँ मोर मानस रमन करिहैं होय सनाथ ।।४३

नाम-मोहब्बत मीठ मोहि कबहुँ लागिहैं नित्त ।।
ज्यों लोभी कामी हृदै वाम दाम दृढ़ चित्त ।।४४

श्याम सजन सम समुझिहौं कबहूँ नाम अनूप ।
विश्ववासना बिलग करि रटि परिहौं रसकूप ।।४५

सिय-सनेह-भाजन सुघन नेह नाम अभिराम ।
कपट-कलंक-कनात विन जपिहौं जिय वसुयाम ।।४६

नाम अनूपम कलन मधि रहिहैं मम मन डूबि ।
महा मोद नित मानिहैं काहू भाँति न ऊबि ।।४७

नाम सिरोमनि सुजस सुनि गूनि गरीयत अर्थ ।
निशि-दिन नेह निबाहिहौं बदन बिहाय अनर्थ ।।४८

चिदचित बिच व्यापक बिमल वरनाधिप निज नाम ।
कबहुँ देखि दृग विषम मति तजि पैहौं आराम ॥४९

महाराज मनि नाम श्रीसुख सवाद सदसद्म ।
समुझि सुमिरिहौं जौकयुत जोहि युगल पदपद्म ॥०५

नाम-लगन अन्तर कबहुँ लगिहैं लोभ- समेत ।
छन बिछुरत तन त्यागिहौं जिमि झख वारि वियेत ॥५१

नाम रटन रसना कबहूँ करिहौं होस हिराय ।
जिमि मयंक मुख प्रानपति निरखति तिय वलिजाय ॥५२

हे अवधेश कुँवर कला-कलित निकर निज नाम ।
दीजै निज जन जानि मोहि हरि हिसाब दुखदाम ॥५३

हे सियवर रसिकन सुखद हे जीवन प्रद नाम ।
अति आरति सह रटन कब करि छैहौं छविश्याम ॥५४

सकृत नाम रसना सुजपि ह्वैहौं कबहुँ बिचेत ।
रूप-माधुरी-मनन मन-मोहन गुनन-निकेत ॥५५

श्रीसरयू तर-तीर प्रिय पुलिन बीच चित लाय ।
रटत नाम पुलकाइहौं नैनन नीर बहाय ॥५६

श्रीबिमलाधिप नाम मनि-माल पहिरि निज जीय ।
रोमरोम छबि छाइहौं निरखत दृग सिय पीय ॥५७

नाम दाम अन्तर कबहुँ फिरिहैं सदा समोद ।
श्रवन सुनत सरसाइहौं सुख सर सुभग सरोद ॥५८

नाम मनोरम माल छवि रवि शशि सहस समान ।
बार-बार लखि हरखिहौं संविहाय तन भान ॥५९

अधिक अमानी होय कब जपिहौं जीवन-नाम ।
सम संतोष सजाय जिय रुचिशुचिसचित्र सुजाम । ६०
प्रणवादिक मंत्रन अमल अर्थ परत्त्व प्रताप ।
कबहुँ ध्याय दृढ़ नाम मधि लहिहौं प्रमुद कलाप ।।६१
अवतारी अवतार जे जाहिर जग जगदीश ।
ते सब नाम परेश परतन्त्र मानिहौं वीश ।।६२
मोद कदंब प्रदान प्रिय मान्य तऊ विन नाम ।
दृग भरि तिन्है न ताकिहौं सुमिरत नाम सुधाम ।।६३
नाम-प्रेम वरधन वरन बिना बैन दुख-दैन ।
समुझि सतत सरसाइहौं सुमिरत नाम सुखैन ।।६४
सुजन-सनेही-सुहृद शुचि शिष्य मानिहौं तौन ।
जासु जीह जप नामकी अपर बात ते मौन ।६५
सुलभ-सुधारस-सिन्धु श्रीनाम-मगन मन मोर ।
कब ह्वैहैं हरदम हरखि तजि ममता-जगजोर ।।६६
रे मन निशिदिन नाम मुद-धाम जपन उत्कंठ ।
करत रहो पुलकित वपुष निदरि आस-बैकुंठ ।।६७
कौन काम की मुक्ति सो जहँ न रटन सियराम ।
नाम-रागविन निदरिहौं सोउ दिन अति अभिराम ।।६८
अमित हान बिन नाम गुनधाम विशेष बिचार ।
चिदचिंतामनि नेह करु परिहर हेतु असार । ६९
श्रीसुख सौ पन नाम-मनि-उत्कण्ठा प्रिय पाठ ।
करत मोद मानस अवस नाम-नेह-रस माठ ।।७०
इति नामोत्कन्ठा समाप्त:

रूपोत्कण्ठा

।। दोहा ।।

सरस सोहावन सुदित मम कब ह्वैहैं करतार ।
लखिहौं नखशिख माधुरी-सिय प्रिय-अंग उदार ।।१।।

लखत-लखत ललचाय चख चित्त मनोहर जोरि ।
मगन होत उतरात तन दैहौं तृण-सम तोरि ।।२।।

युगल रूप - रस - लालची लट्टू होइहौं हेरि ।
कोटिन काम कट्टू कबहुँ समुझि रहौं मुख फेरि ।।३।।

सियपिय-वपुष-पियूष प्रिय रूप पेखि उत्साह ।
कब सजिहौं मत्सररहित चित-चढ़ाय चय-चाह ।।४।।

जो कोउ कहिहैं हरषि हिय रूप-कथा कमनीय ।
सुनिहौं मनमुद मगन ह्वै मानि सुगुरु रमनीय ।।५।।

सतसंपति दंपति-चरण चारु सरोज विचित्र ।
कबहू मम मानस सरस संकाशिहैं पवित्र ।।६।।

वर वासर छन क्षेम-निधि कदाकंज मृदु मंजु ।
मधुप-मराल रसाल-सम ह्वै बसिहै तजि रंजु ।।७।।

जगमग पगपंकज परम प्रेम-प्रवाह निहारि ।
ह्वै रहिहै चेरी सुमति सुरति सोहाग विचारि ।।८।।

ललित ललन लोने युगल पदपंकज प्रिय अंक ।
अति अनूप नवरंग से रँगिहौं विगत कलंक ।।९।।

परम प्रकाशित पृष्टपद दृग देखिहौं कदापि ।
लोक शोक शत वासना निदरि अमित तम टापि ।।१०

अरुन हरन-मन नख-प्रभा राकापति शत-तूल ।
मृदुल सचिक्कन चाहि कब ह्वै जैहौं भव-भूल ।।११

मम मन तम-पूरन सतत संकाशिहै निशंक ।
श्रीनखदुति अनुभव मिलित लगन डाकिनी डंक ।।१२

अङ्क अनूपम माँह मन कबहुँ उरझिहैं दैव ।
कैसेहु बहुरि न सुरझिहैं जिमि सन गाँठि अतैव ।।१३

नूपुर नेहनिकेत निज जीवन जेहरि जोहि ।
कबहु कषायन कतल करि मुद पैहै मन मोहि ।।१४

अमल ललित अँगुरीन-छवि मधुर आभरन-संग ।
कब जोहत युग जाइहै निमिष समान सरंग ।।१५

अमल कमल-कोमल-ललित सुपद-विभूषन-बीच ।
मम मन मनि ह्वै लागिहै सुनत-सुरव रससींच ।।१६

विसद आभरन मनिप्रभा-मध्य कबहुँ रस एक ।
उरझैहै मेरो सुमन संतत सजि दृढ़ टेक ।।१७

श्रीरसिकेश-मनोज-मद - दमन विभूषन - रंग ।
निरखि हरखि बलि जाइहौं छोड़ि देह-गुन-संग ।।१८

युगल किशोर-कलानिकर-आकर छवि-गुन-धाम ।
अति अनुपम दृग देखि दुति दुरवैहौं कुल-काम ।।१९

युगल चरन-अरविन्द मृदु मधुर मरन्द अमंद ।
मन-मिलिन्द कब चाखिहौं परिहरि वनविष-फंद ।।२०

एंडी गुल्फ अजूब श्री प्रनय – पुष्ट – रस – दैन ।
कबहु देखिहौं दृगन भरि करि कल नेह अमैन ।।२१

जानु जंघ जगमग महा मनहारी कल कान्ति ।
सरसस्वच्छशुचि निरखिहौं सजि सबविधि चित शांति।२२

कृस कामद कटि केलिमय रुचि रसराज सुधाम ।
किंकिन कलित उछाह-भरि लखिहौं कबहु अकाम ।।२३

नवल नेह – पूरन युगल निरखि नितंब सप्रेम ।
निज वपु प्रिय तित लीन ह्वै कब लहिहै छम क्षेम ।।२४

नील पीत कौशेय वरवसन लसन लखि नैन ।
ह्वै जैहौं कबहू मगन लगन लगाय सचैन ।।२५

कलित किनारी कोरकनि मानिक-मनिन-समेत ।
अनुरागिन हिय हरषप्रद अद्भुत छवि दुति केत ।।२६

पियप्यारी – पौशाक प्रिय परमा प्रभानिवास ।
पुलकि सजल दृग देखिहौं करि अनन्त अभिलास ।।२७

घन-दामिनि-निदरनि वसन रसन सोहाग-समेत ।
मम मन – नैन निहाल ह्वै कब हेरिहैं सहेत ।।२८

नाभि मनोहर निम्न सर सुभग अनूपम देखि ।
त्रिवली तरल-तरंग-युत लोचन सफल विशेषि ।।२९

भाव – उमंग बढ़ाय उर रस पसु वपुष सवाँरि ।
लखिहौं नाभि-सरोज-छवि निखिल अपनपौ वारि ।।३०

अंबक अचल सराग मुद – मंदिर उदर – समीप ।
लगि पगि पैहैं प्यार पद पावन दृग दिल – दीप ।।३१

चलदल परन समान कवि-कथन न तेहि थल सोह ।
युगल–ललन लोने सुधा – सागर–अंग–विमोह ।।३२

उर उज्वल लावन्यनिधि विस्तीरन रसरास ।
विशद विभूषनमय मधुर कब लखिहौं पगि प्यास ।।३३

मुक्तामाल - रसाल - वनमाल - दाम बहु भाँति ।
सोहत मन–मोहत–रसिक जोहत नित नव कांति ।।३४

मेरी मति मालान – मधि कब गुथि जैहैं हेरि ।
सुदिन सुछिन ह्वैहैं कबहु सब दिशि से मुख फेरि ।।३५

कलित कंचुकी चारु चख चितवत कुच कल संग ।
लोभित ह्वै रहिहैं सुदृग मन समेत रसि रंग ।।३६

श्रीसियस्वामिनिनेहनिधि – अंग – सुरंग – सुखैन ।
कबहु ध्याइहौं हरखि हिय पाय अचल चित-चैन ।।३७

कंबु कंठ कमनीय गुन रेखर शेष – निवास ।
ललित विभूषन वलित कव लखिहौं सहित हुलास ।।३८

कलित कौस्तुभमनि प्रभादार पोत दुतिदाम ।
निरखि नैन निधि पाइहैं बार–बार अभिराम ।।३९

सरसीरुह - सुन्दर - सुखद-कोमल-ललित-ललाम ।
कबहु कंजकर रागमय तकि छकिहौं वसुयाम ॥४०

मृदु अँगुरिन-मुद्रिक मधुर मण्डित मनि-कल-कांति ।
नख नव नूर-समेत कब लखि रहिहौं सजि शांति ॥४१

अमल आरसी सरस दुति दृगन देखि विन मोल ।
कब बिकिहौं वलि काँतिमधि लीन होय अति लोल ॥४२

रंजित मृदु मेहदी मधुर सज शुभसदन सुकंज ।
कबहूँ तेहि रँग माझ मति मिलि रहिहैं गत-रंज ॥४३

पहुँची प्रियपानिय परम कनक कटक कमनीय ।
कंकन-कला-कबूल-तकि छकिहौं रसि रमनीय ॥४४

भक्त-भाव-वरधन सुभुज जानु-प्रयंत विराज ।
मन-मोहन भूषन नवल ललित छनहि-छन छाज ॥४५

अङ्गद बाजूबंद बर बाफत बीज विचित्र ।
धनुष-बाण-संयुत सुभुज लखि कब प्राण पवित्र ॥४६

श्रीभुज-अवलंबन विना अभय न मन-मति होत ।
सो कबहूँ करि शरन सुख सरसे सहज निशोत ॥४७

चिबुक चारु चित-चखन-चल-चोरन विंदु-समेत ।
निरखि हरखि बरखाइहौं सुमन-सुरंग-सहेत ।.४८

नीलपीत वरविंदु-बिच चित चल-अचल कराय ।
सकल स्वाद-रस पाइहौं सोउ दिन विधि उघराय ॥४९

युगल किशोर-कपोल कल–अमल-मुकुर-दुति-दैन ।
अति अनूप आभा वलित पेखि पाइहौं चैन ।।५०

अधर मधुर मनमोहने असल राग–रसरूप ।
कबहुँ भाव – भरि हेरिहौं हरन-हीय - दृग धूप ।।५१

अति अनुपम रंजित रुचिर दशनावली विलोकि ।
कंज-कोश-मधि-दाम दुति तउन तुलत छवि लोकि ।५२

द्विजप्रति मति मेरी अटकि रहिहैं सरस सचेत ।
कदा कलित तिथि आइहैं थकि बसिहैं मनप्रेंत ।।५३

रसना रागमयी बिपुल विद्या - विभव - निवासि ।
निरखि वचन-पीयूष प्रिय सुनि पैहौं सुखराशि ।।५४

वीन–झीन–सुरघन - कलित–कोकिल–कूक कठोर ।
युगलकिशोर–गिरा मधुर चमन चारु चितचोर ।।५५

जौं लौं बाग--विहार–रस बाग–सैर नहिं कीन ।
रे मन तौ लौं अमित मत कथन सुनन विष-भीन ।।५६

श्रुति सोहन मोहन - मनहि दोहन - रहस उदार ।
सकल फलन फलप्रद परम वचन-रचन छविदार ।।५७

मंदस्मित संयुत वचन सुनि पाहन पिघलात ।
अहोभाग सुनिहौं कबहुँ बिसरि लोक–श्रुतिवात ।।५८

अमित कलप परिताप-तम विषम भावना हीय ।
सुनत सुधेश वचन सरस शीतल दुति रमनीय ।।५९

नवल नेहनिधि नासिका मुक्ता-सुनथ-समेत।
झुकनि-ललित-डोलनि अधर-परसनि-हिय हरिलेत ।।६०

ललित लाड़ली लालवर बेसर विशद बुलाक।
पगनि परसपर पेखिहौं करि चित्त चपल हलाक ।।६१

उरझनि नवल अनूप नथ-मुक्ता मधुर सुरंग।
दृग देखत ललचाइहौं पल प्रति सजत उमंग ।।६२

नैन मैन - मद - मथन मुद-अैन दैन-दुति-दोह।
कबहुँ हेरिहैं तरफ मम सहित सुधा-सम छोह ।।६३

अंजन-अंजित श्याम-सित-अरुन रंग रमनीय।
सुख-समूह-बितरन कुशल लखि ह्वैहौं कमनीय ।।६४

चित्त चोरावनि चारु चल चितवनि अविचल-बीज।
कब बिलोकिहैं ओर मम सबही भाँति पसीज ।।६५

रे मन अमन आमन ह्वै निरखु नैन सुख-खान।
सुख-समाधि दैहै अवस हिरस-हिराय-हरान ।।६६

मुख-मयंक-कल-कौमुदी-प्रभा सुशीतल हीय।
कबहुँ फैलिहैं फबित गुन गुनि अंतर रमनीय ।।६७

बदन बिचित्र वनज सतत संविकास रस-धाम।
लखि मन-मधुप मोहाइहै ह्वै तन्मय बसु-याम ।।६८

अति अनूप विधु-वदन-बिच चित चखचारुचकोर।
एकटक ह्वै कब लागिहैं निशिदिन नेह हिलोर ।।६९

स्वच्छ सुधा सर सुभग मुख मम मानस दृगमीन ।
मगन निरंतर रहै कब सजि सनेह पन पीन ॥७०

सुठि सुपलक प्रिय पक्ष भ्रू बंक कमान समान ।
वरुनी वान निशान नव नैन निरखि मस्तान । ७१

सुखमा भवन श्रवन कलित कुण्डल ललित समेत ।
रमक झमक झूलन निरखि ह्वैहौं कबहुँ अचेत । ७२

झाँई कलित कपोल मिलि महामोद मन देत ।
युगलानन्यशरन हृदै हारी सब सुधि लेत ॥७३

भाल विशाल रसाल दिल देत कमाल जमाल ।
तिलक चिलक चितवत सुमन करन हरन हिय साल ।।७४

बंदी बेना विदुवर शीश सुमन सुखखान ।
कबहूँ दृग भरि जोहिहौं जटित मनीन महान ॥७५

झमकदार झुमका ललन लोयन करन निहाल ।
तकि छवि छकि बकिहौं न कुछ रोमरोम खुसहाल ॥७६

कुंचित मेचक केश शुचि सुरभित रसपनिवास ।
उर उमगाय निहारिहौं कौन सुदिन सुखरास ॥७७

केश कलित सीमंत कल कबरी कलानिधान ।
ग्रथित मधुर मुक्तेश मणि प्रीतम प्रीति निदान ।।७८

श्रीस्वामिनी सुकेश वर विसद दमक शितलेश ।
हेरि हिरा जैहौं तहाँ सजि सिंगार – आवेश ॥७९

जुलुफ जंजीरन बीच चित चंचल उरझि विशेष ।
कबहुँ अहो विधि एकरस फँसि रहिहैं अनिमेष ॥८०

चारु चन्द्रिका चमक कल क्रीट सरस सिरताज ।
कबहुँ हेरिहौं लीन ह्वै शमला सब्ज सुराज ॥८१

सारी दुति–वारी सुरभि–सानी शीश निहारि ।
बार–बार तन–मन–करन निकर दीजिहौं वारि । ८२

श्री प्यारी – सारी – सुधा बोरी चमकन माँझ ।
मन–मति–गति तित राखिहौं जिमि सनेह सुत बाँझ ।८३

श्रीसियस्वामिनि–साटिका किधौं बाटिका–प्रीति ।
फूली सुमन मनीश फल लोयन लाह सुरीति ॥८४

घन दामिनि चंपक तरुन तरु तमाल मनिमाल ।
युगल सुछवि तकि वारिहौं सब उपमान जमाल ॥८५

युगलकिशोर चतुर चरन गति अति रति दृग दैन ।
निरखि हरखि उपमा निखिल हँसि पैहौं चख चैन ।८६

प्रीतम प्रानप्रिया पगे प्रेम परस्पर पेखि ।
धन्य अपनपौ मानिहौं तृन सम त्रिभुवन देखि ॥८७

अङ्ग अङ्ग पर वारिये अमित अनंग गुमान ।
पल प्रति छवि शतगुन नवल लखि लहिहौं सुखखान ॥८८

तिन सम बढ़भागी न कोउ कोटिन लोक मँझार ।
जिन उर उत्कण्ठा युगल रूप परम सुखसार ।.८६

सो सुभागमान न सभा माँझ सरस सिरताज ।
जौ न सुजन जिय रूपरस उत्कंठा थिर राज ।।९०

वंदनीय पद वन्दिये इष्ट समान सुधारि ।
तिनकी कृपा कटाक्ष से सिय पिय रति अविकारि ।।९१

यथा लगत आसक सुमन शुचि मासूक समीप ।
तथा रूप उत्कंठ उर धारत नित दिल दीप ।।९२

सिय जवन परिकर सहित कबहुँ हेरिहौं नैन ।
रोम रोम पुलकाइहौं सुनत मधुर वरवैन ।।९३

सुभग रूप उत्कंठ कल कीरति वरनत वैन ।
सियपिय कृपा कटाक्ष से झलक रहे उरऐन ।।९४

इति श्रीउज्ज्वलोत्कण्ठायां श्रीयुगलानन्यशरणविरचितावां
श्रीसीतारामाभिराम-रूपोत्कण्ठा द्वितीया समाप्ता

गुणोत्कण्ठा

॥ दोहा ॥

श्रीसियवर-गुनगन विशद रसद रमन-मन-प्रान ।
मगन महोदधि मोद ह्वै कब सुनिहौ धरि ध्यान ॥१

मृग-मयूर-सम सुजस सुनि गुनि धुनि पुनि पुनि शीश।
चकित होय कब नाचिहौं निदरि वपुष तमतीस ॥२

कबहुँ गाइहौं गुरु गिरा गम्य गरीय गुनानि ।
द्वंद मंद अपहाय हिय प्रीति-प्रनय पहिचानि ॥३

पुलकित वपु गदगद गिरा नैनन नीर बहाय ।
गुन सुनि रसना गाइहौं लोक-लाज जलवाय ॥४

करुना-कृपा-कदम्बिनी कब बरसिहै विचित्र ।
मम मानस-महि-मध्य नित तोषकरन सुपवित्र ॥५

वात्सल्य सौशिल्य शुचि सुख सौपन गुन दिव्य ।
मनन निरंतर कबहूँ करि परिहरिहौं भवसव्य ॥६

अगुन सगुन-वर-बोधघन बीज सुगुन दुतिवंत ।
श्रवन सुनत सरसाइहौ जिमि तिय आगम-कंत ॥७

सिय-वल्लभ-शुभ-सुलभ-गुनमाझ पोहिहौं चित्त ।
महामोद-मन मानिहौं यथा रंक वरबित्त ॥८

श्रीसीता --सुखप्रद - सुगुन सुधासहसमधुरेश ।
रसि-रसि रस हरषाइहौं निदरि नेह-भव-वेस ॥९

दुतिनिधान दिलवर-दया अति अभयी जिय जानि ।
जगत-जलूस जलाइहौं प्रिय प्रतिकूल पछानि ।।१०

जिमि मलीन मनमोद-युत सुनत अपर उपहास ।
रोमरोम तिमि पुलकि नित सुनिहौं गुन-सुखरास ।।११

कोटि कलाकर-रवि-सरिस शीतल-तेज-निधान ।
श्रीविमलाधिप-गुन-श्रवन सुनिहौं होय अमान ।।१२

श्रीकोशलपति सदसुजस श्रीगुर - संतन - संग ।
सुनि गुनि नेह-निवाहिहौं निदरि मनादिक जंग ।।१३

हे विधि विरद विचारि चित वचन वदिय मम प्रीति ।
कबहु नवलगुन अमल मधिलगिहै सहित प्रतीति ।।१४

सुन्दरता - माधुर्य्यता - सुकुमारता - सुवेष ।
महामोदनिधि गुननमधि ह्वैहौं मगन निमेष ।।१५

श्री सीतापति गुन गनन गुनि जैहौं गिर बीच ।
युगलानन्य विहाय बहु वाद विषम मग मीच ।।१६

मोद-विनोद-निकेत श्रीसीतावर - गुन - गाथ ।
श्रीगुरु - संतन से कबहु सुनिहौं होय सनाथ ।।१७

जग - जीवन - पीयूषपर प्रीनन प्रान प्रचार ।
श्रीसाकेतपरेशगुन गैहौं बलित विचार ।।१८

श्रीसीतावर - गुन - अगुन-अनुभव वितरनहार ।
कबहूँ मन निर्मल सहित चितवैहौं पगि प्यार ।।१९

कबहूँ कीरति - कांति-मधि ह्वैहैं मम मन लीन।
पलभरहू न बिछोहिहैं ज्यों सुन्दर सर मीन ।।२०

लाभालाभ - विलास बहु विषम वासना - वारि।
गइहौं उर उमगाय गुन करन कलेवर वारि ।।२१

जिमि देशादिक कलिकथन रुचत हृदै हरषाय।
तिमि तम-तरनि नवीन गुन सुनिहौं वन वरषाय ।।२२

प्रतमी निद्रादिक निदरि निरथ नेह नर जानि।
कबहुँ कृपा-कमनीय-बल गुनिहौं गुन सुखखानि ।।२३

यथा ज्वरादिक जरनयुत जन न रुचत मधु चीज।
तथा विभव बहु अरुचि चित ह्वैहै विन-गुन-बीज ।।२४

परानन्दरसधामगुन-स्वादी रसिकन साथ।
कबहु हुलसि मन उरझिहैं छोड़ि छाह गदगाथ ।।२५

श्रीसिय-स्वामिनि-संग सुख-सुखमा-सागर श्याम।
दिव्य-भव्य-नितनव्य गुन गैहौं तजि धन-धाम ।।२६

ऐसो वरवासर कबहुँ ह्वैहै श्रीसिय-राम।
लगिहै हालाहल-सदृश चरचा - जग दुख-ग्राम ।।२७

सिय-सुखमा-सर-हंस-गुन जौलौं मनन होत।
तौलौं खेद - कदंव कटु सहत शीश अनघोत ।।२८

श्रीसद्गुरु सुठि-सुजस शुभ सत-सिद्धान्त हमेश।
श्रीसियवल्लभ-गुन श्रवन सो सुनि हो सुख बेश ।।२९

श्रीहरिहर विधि प्रमुख सुर मुनिन सुप्रानअधार।
श्रीसियजीवन-गुन हृदै गुनिहौं समुद अपार ।।३०

जब-जब कटु कर्मन विवश वपु धारौं भव-माँह।
तब-तब हे सियराम मोहि देहु सुगुन-तरु-छाँह ।३१

अति अपार औगुनन को सदन हमारो हीध।
श्रीसिय-पिय गुरु-कृपा से सोउ ह्वैहैं रमनीय ।।३२

श्रीगुन - उत्कण्ठा करत भरत हृदै उत्साह।
सियवल्लभ तेहि बस सतत होय हरन दिल-दाह ।।३३

श्रीगुनगन-सीचन-विना हरित होत नहि हीय।
ताते गुन-गन गाइहौं निदरि आसरो वीय ।।३४

इति श्रीउज्ज्वोत्कण्ठायां श्रीयुगलानन्यशरणविरचितायां
श्रीगुणोत्कण्ठायां तृतीया समाप्तः

धामोत्कण्ठा

॥ दोहा ॥

श्रीसियराम सनेहनिधि अवधधाम अभिराम।
निखिल निकाई नाहप्रद सेवत सब सुखसाम ।।१

मन-बच-बपु श्रीधाम मधि कब बसिहौं सुख-संग।
देखत दृग दुति दिव्य महि मोदमयी रँग-रंग ।।२

श्रीविमला-वैभव विमल बरनत बदन सप्रेम।
अचल निवास सजाइहौं संतत सजि निज नेम ॥३

श्रीसाकेत सुधासदन मनिमय महल निहारि।
निशि-दिन निमिष-समान कब बितवैहौं दुखदारि ॥४

श्रीसीतावर रसरसिक तरु तृण गुल्म लतान।
निरखि नेहयुत नाचिहौं संविहाय भव-भान ॥५

श्रीसत्या भूरुह विशद रसद रंग रमनीय।
सफल सुमन पल्लव निरखि बिसरैहौं तम-तीय ॥६

श्रीशोभा-सर-धाम-मधि मगन होय दिन-रैन।
विविध बासना निदरिहौं सुमिरत सदन सुखैन ॥७

खान-पान-सनमान सब हान जानि अनुमानि।
श्रीकोशला समीप विन निखिल लाह दुख-खानि ॥८

श्रीसरयू-जल-पान करि रहिहौं हरष-समेत।
असन रसन चित्त-चाह नहि करिहौं कबहुँ जनेत ॥९

श्रीसरयू - पावन - पुलिन प्रेम - प्रमोद - निधान।
श्रीप्रमोदवन-द्रुम मधुर लखि तजिहौं तम - तान ॥१०

श्रीअशोकबाटिका तरु तरे तृषा तनु त्यागि।
पुलकित बपु वसिहौं कबहुँ युगल-रूप-रस-रागि ॥११

ललित लाड़िली-लाल छवि छटा जहाँ तहँ हेरि।
दशा दिवानी धारिहौं दोउ दिश से मुख फेरि ॥१२

लोकलाज कुलकाज को समुझि सुमन विषरूप ।
बसिहौं बिमला विमल बुधिबलित लखत युग रूप ।।१३

कबहूँ कनक निकेत रति हेतु माँझ ललचाय ।
सरस सजातिन संग सुठि सजिहौं चित परचाय ।।१४

सुभग दिवस ह्वैहैं कबहुँ धाम निवासिन संग ।
कोटि कुटुम्बनि से सरस बढ़वैहौं रुचि रंग ।।१५

जो कोउ धाम निवास हित हरषि बोलिहैं बैन ।
तेहि अनुमोदन विविधि करि चलचित पैहौं चैन ।।१६

धाम सनेहिन साथ मम कब बढ़िहैं अनुराग ।
अधिक अमानी होय हिय सुनिहौं सरस सुबाग ।।१७

अपर कुदेशन में भ्रमत श्रमत सुधाम बिहाय ।
तिन सन नेह निवारिहौं समुझि विवर धन हाय ।।१८

युगल उपासिक स्वच्छ निज नाम धराय जहान ।
बसे न धाम विनोद बन तेहि सम कौन अजान ।।१९

बिसद बिरति बानिक बलित बहुरि गमन विविदेश ।
युगलानन्यशरण तिन्है तजिये तृन सम मेश ।।२०

श्रीसत्या सरयू सुधा पीबत मन मुद मानि ।
तिन रसिकन पद-कंज रज कब पूजिहौ अमानि ।।२१

अमित कलंक उपाधि दुख दारुन सहि सुख साथ ।
बसिहौं श्रीसरयू सुतट सुमिरत सिय रघुनाथ ।।२२

श्रीसीतारामास्पद संयुत सुखद सुधाम ।
अवध अवधिभरि भजन युततजि तिलोक तम खाम ।२३

सेवत धाम मुराद मन पूरन रंग अनंत ।
चढ़े चित्त बहु बित्त छवि छन-छन श्रीसिय-कंत ।।२४

धाम दरस देखत दृगन चलिहै कबहुँ प्रवाह ।
आपा-पर बिसराय सुधि अचल चित्त चख चाह ।।२५

श्रीसुखमानिधि-धाम मधि कब बसिहौं पन-ठानि ।
शीश छेदहू भये पर प्रीति-प्रतीति न हानि ।।२६

बिधि-हरि-हर-पुर-चाह चित सपनेहू बिसराय ।
बसिहौं लोक कदम्ब तजि अवधि बीच हुलसाय ।।२७

अहोभाग अनुराग मम मानुष-बपु प्रिय पाय ।
अचल बास-सरयू-सुतट विषम बिकार बिहाय ।।२८

मान-प्रतिष्ठा घूरि-सम ऋधि-सिधि धूर-समान ।
अनत बड़ाई बिष निरखि बसिहौं धाम प्रधान ।।२९

अवध-परागन पर अमित लोक लोकपति-भूति ।
वारि दीजिहौं शंक-बिन सोउ पल प्रीति प्रसूति ।।३०

श्रीसीता-वल्लभ-सुगुन गावत सुनत समोद ।
करिहौं विमला भूमि बिच अटन वजाय सरोद ।।३१

राग-द्वेष-दुर्मति-दगा दूरि किये श्रीधाम ।
सतत सेइहौं हरख हिय पाय परम विश्राम ।।३२

षट् ऋतु रहस उछाह दृग देखत कल्प करोर ।
बितवैहौं पल पाव सम सुमिरत युगलकिशोर ॥३३

तजिहौं नहिं श्रीधामपद होनी होय सो होय ।
परम पतिव्रतधर्म धरि बसिहौं विधु-मुख-जोय ॥३४

धाम-नेह निर्मल - निजानन्द - सुपद - दातार ।
युगलानन्यशरण सुमन समुझत प्रमुद अपार ॥३५

बार-बार बहु बिनययुत याचत सिय-पिय पास ।
दीजै धाम सुवास मोहि हरि हिसाब भव भास ॥३६

अमल धाम उत्कण्ठ वर बाँचत सुनत सुमोद ।
पैहैं बिमलावास सुचि सुजन बैठि पिय गोद ॥३७

इति श्रीधामोत्कण्ठा चतुर्थी सामाप्तः

लीलोत्कण्ठा

॥ दोहा ॥

श्रीसीतावर बसु पहर लीला रितु रस रीति ।
उत्कण्ठा उर रैन दिन कब ह्वैहै पगि प्रीति ॥१

मनिमय महल चहल पहल माँझ मनोहर रङ्ग ।
प्रिय परिकर सह प्रानप्रिय लखिहौं कबहुँ उतङ्ग ॥२

श्रीसुखमा सुखसिन्धु श्रीकनकसदन निज धाम ।
रचना अमित निहारिहौं समैं समै अभिराम ।।३

यूथेश्वरिन महल मनिन मण्डित नैन निहारि ।
श्रीगुरु आचारज भवन लखि ह्वैहौं बलिहारि ।।४

सप्ताबरन सुरंग मनि नाना जड़ित बिलोकि ।
अति अनूप आलिन महल तकि छकिहौं दृग रोकि ।।५

बिसद बाग सत सौज सज सदन विलच्छन पेखि ।
मगन होय हरखाइहौं धन्य अपनपौ लेखि ।।६

अष्ट कुँज कमनीय चहुँ ओर चारु चित चोर ।
निरखि निछावरि होइहैं तन मन रँग रस बोर ।।७

अमित रंग रंजित बिहँग नाना जाति बिचित्र ।
कबहुँ हेरिहौं हरित हिय दशा धारि समचित्र ।।८

ललना ललित सवाँरि तन अतन निबारि सचेत ।
कबहुँ युगल छवि हेरिहौं बसि श्रीकनकनिकेत ।।९

बपुष तीन अध्यास कब त्यागि समुझि शतशाल ।
रमिहौं निज अनुपम सु तन श्रीगुरुपद सजि भाल ।।१०

ऊपर कायिक कृत निकर अंतर राग रसाल ।
युगलानन्यशरण कबहुँ ह्वैहै अद्भुत ख्याल ।।११

सुमन सेज मुद मोद सदसदन सैन रस रूप ।
लोचन लगन लगाय कब तकि छकिहौं गत धूप ।।१२

चहूँ ओर झम झम झनक नूपुर किंकिन बीन ।
सुभग सहचरिन मधुर धुनि कब सुनिहौं रति लीन ।।१३

रंगमहल मधि मोदनिधि ललित लाड़िली लाल ।
पगे परस्पर प्यार कब लखिहौं होय निहाल ।।१४

युगल सुजीवन जान मम गम तम समन सुशील ।
सदन सैंन जागे सरस रागे रँगन रंगील ।।१५

कबहुँ हेरिहौं नैन निज अति अलसाने अंग ।
प्रियाप्रेम परतंत्र पिय सिय समेत रसि रंग ।।१६

उन्मद दृग राते रहस अरस निबारन नैन ।
निरखि हरषि बलि जाइहौं सुनि सरसाने बैन ।।१७

प्रेम प्रमोद महा मदन मद माते दोउ प्रात ।
झुकनि परस्पर प्यार पगि जोहि मोहिहौं गात ।।१८

आलस रस बस बरबचन सुमन सचन सुखसार ।
उर उमंग उमगाय कब सुनि ह्वैहौं बलिहारि ।।१९

सिथिल बसन भूषन लसन युगल ललन विपरीत ।
कौन सुदिन अनुपम निरखि पैहौं प्रीति प्रतीति ।।२०

निज यूथेश्वरि संग मिलि सेवत रुख रमनीय ।
सखिन सहित गुन-गान कब करिहौं कृत कमनीय ।।२१

रंग रंगीली रागिनी प्रात गाय हुलसाय ।
कबहुँ ललन रिझवाइहौं रसना रहस रसाय ।।२२

सीज सरस सहचरिन कर कंज युगल अनुकूल ।
निरखि हरषि ललचाइहौं लोचन लाह अमूल ॥२३

श्रीयूथेश्वरि साथ युगजीवन रूप अनूप ।
पट उघारि लखिहौं कबहुँ परि उछाह-रस-कूप ॥२४

चौकी चिन्तामणि चमकदार सेज प्रिय पास ।
पधरैहौं जीवन जसी करत गान रस रास ॥२५

मंगल बस्तु बिचित्र दृग सरस समीप दिखाय ।
पुनि बिधु बदन बिलोकिहौं सोउ शुभसमय सोहाय ॥२६

रसावेश उरझनि उरसि उज्वल लगन लगाय ।
विकल बपुष मंगल असन करवैहौं उमगाय ॥२७

अमल अलौकिक प्रेमयुत असन समै रस सान ।
यकटक कबहुँ बिलोकिहौं होय महा मस्तान ॥२८

पिय प्यारी प्रिय प्रात कृत कलित सरस सुखदैन ।
कबहू सरुचि जिवाइहौं पल प्रति पावत चैन ॥२९

भूषन बसन सवारिहौं दृग देखत दुति रूप ।
धन्य धन्यतम मानि मन रसि रहिहौं रसभूप ॥३०

मंगल कुंज-बिहार बहु सखिन समाज समेत ।
गान तान कौतुक कला पियप्यारी हिय हेत ॥३१

दंत सुधावन कुंज मधि रदन सुदुति दमकाय ।
आलिन मन मोदित करत कब तकिहौं हरखाय ॥३२

गौर श्याम अभिराम मृदु मूरति मोदनिधान।
सखिन समूह सुमध्य में लखि छकिहौं पगि प्रान।।३३

श्रीपियप्यारी प्रमुद मन सखिन समेत सुरंग।
मज्जन कुंज मराल गति निदरन गमन उमंग।।३४

कबहुँ चारु चख चाहि चित ह्वैहैं विचल विशेष।
लोक वेद वागन त्रिरसि पाय प्रीति बर वेष।।३५

अति अनूप मज्जन सरस साल रसाल सोहाय।
जेहि छवि तकि कबिगन चकित बरबस सुमन मोहाय।।३६

मज्जन साल रसाल सर चहूँ हरित द्रुम बेलि।
युगलकिशोर विलोकिहौं तेहि थल सजत सुकेलि।।३७

लली लाल मुदमाल प्रिय परिकर सहित नहान।
केलि कदँब कौतुक कलित कब लखिहौं सुखखान।।३८

नवल नेहमैं कुण्ड कल कौतुक मन बच पार।
अहो सुदिन दृग देखिहौं होय बिपुल बलिहार।।३९

स्वच्छ सुहावन बसन भल भूषन समय सुयोग।
पहिरैहौं दोउ ललन तन मानि सफल दृग भोग।।४०

सुभग सवारी सजि युगल ललन समुद पधराय।
लखिहौं लोचन लाय छवि बिरह ब्यथा बिसराय।।४१

श्रीसहचरी समाज युत शुचि श्रृङ्गार निकुंज।
कबहुँ जात दृग जोहिहौं करि चचंल चित लुंज।।४२

श्रीरसराज मधुर सदन माँझ मनोहर जोरि।
सजि शृङ्गार बिलोकिहौं सब सन नाता तोरि ।।४३

रंगरंग भूषन बसन नख-शिख रचि रुचि सँग।
मुकुर देय कर कंज मधि निरखैहौं सोमंग ।।४४

श्रीनृपनन्दननंदिनी नेह निकेत निहारि।
प्रिय परिकर पेखत परम बहिहैं बन दृग धारि ।।४५

कबहुँ प्रेम भरि मानसर कसर कल्पना हीन।
निरखि नैन मूरति मधुर ह्वैहैं मन मधु मीन ।।४६

कलित कलेवा कुंज मधि असन अनन्त विधान।
पावत शुचि रुचि सखिन मिलि लखिहौं बिन व्यवधान ।।४७

थाल प्रसाद सुखद सुधा समुद स्वाद सह पाय।
कब प्रमोद वारिधि विषै मगन होइहौं जाय ।।४८

श्रीकर मुख विधु आचमन सरस सनेह कराय।
नव निचोल परसाय पुनि सुरभि सुबपु परसाय ।।४९

बीरी विशद बनाय विधु बदन देय हरषाय।
दृग भरि छवि फबि हेरिहौं मंद हँसनि ललचाय ।।५०

सिय परिकर प्रीतम परम प्रीति पेखि सब भाँति।
कलित केलिमय बस्तुबर धरिहौं तकि नव कांति ।।५१

शुभ सतरंज गँजीफ चित चोरन चौपर चारु।
अपर खेल मुद मेल सखि धरि समीप छवि सारु ।।५२

मृदुल मनोहर कंज कर गहि प्रिय पासन स्वच्छ ।
कब ढारत अति अदा सजि दृग देखिहौं प्रतच्छ ॥५३

श्रीप्यारी दिशि बैठि कब चलिहौं सारि सप्रीति ।
होय मोदनिधि मन मगन समुझि सनेहिन रीति ॥५४

हाव – भाव अनुभाव रस सरस परस्पर पेखि ।
ह्वै जैहौं बलिहारि निज भाग अनूपम देखि ॥५५

हारि ह्वै हारी बिशद रस बरसत तन श्याम ।
उर उछाह चख चौगुने कब तकिहौं अभिराम ।५६

युगल ललन मृदु मिलन मद मनसिज जगन अजूब ।
लगन लाय लोचन कबहुँ तकि छकिहौं हिय खूब ॥५७

चंपक चप चपला पुरट घन मनि तरुन तमाल ।
कबहुँ बारिहौं हेरि दोउ सुन्दर रूप रसाल ॥५८

मो तन तकि कहिहैं कबहुँ अरी आज रसराज ।
रहस सोहावन श्रवण कर यूथेश्वरिन समाज ॥५९

मम माथे हरखित ह्वै प्रिया प्रानप्रिय संग ।
कबहुँ मंजु मोहन मुकर धरि हरिहौं बदरंग ॥६०

श्रीपूजित पद-पंक रुह कौन सुदिन बरबैन ।
कहिहैं मोहि निज किंकरी अति अद्‌भुत प्रद चैन ॥६१

जानि आपनी किंकरी त्रिविध भाँति निज हीय ।
महल टहल करवाइहैं श्रीसिय छवि रमनीय ॥६२

अहो सुदिन शिर मोर कब युगल दिये गलबाँह ।
मंद मधुर मुसुकाय मुख कब लखिहौं चितचाह ।।६३
जगमग भूषन बसन बर गौर श्यामअँग-संग ।
अति अनूप दृग देखिहौं सजि उत्साह उमंग ।।६४
पल-पल पर रचिहौं कदा केलि कदंब सचाह ।
जिमि निधनी धन कामिनी प्रीतम मिलन उछाह ।।६५
राजभोग शुभसमय लखि सखि सियश्याम रिझाय ।
मृदु मुसुकान निहारि पुनि कही सयुक्ति जनाय ।।६६
सुनि सखि-बैन सुखैन दोउ राजिव-नैन उदार ।
चले मत्तगज गमन युग जीवन-प्राण-अधार । ६७
असन साल पथ अमित विधि चरित-उछाह अनूप ।
कब लखि हिय हरखायहौं छकि उज्वलरस भूप ।।६८
हौं हेरिहौं समाज-सुख असन साल मुद-माल ।
पिय-प्यारी-जेवन मधुर परिकर-सहित रसाल ।।६९
महामोद-मंदरि सुछिन ऐहैं अहो उदार ।
जब जोइहौं उमंग-भरि भाविक सुमन अधार ।।७०
करहि केलि कमनीय श्रीसुखमा-सदन अजूब ।
बलिहारी परिकर करहि भरहि उछाय सुखूब ।।७१
असन - रसन - उत्सव-अमल-कमल-खिलावनहार ।
अहो हेरि हरषित हृदे तजिहौं वपुव्यवहार ।।७२

उत्कंठा-किंकरिन लखि लालन ललित सुभाव।
निज विधु-वदन पुनीत प्रिय शेष दीन्ह चितचाव ॥७३

कहा कहों विधि सुदिन उहजब जन जानि बुलाय।
दै प्रसाद अह्लाद-घन रहिहैं मृदु मुसुकाय ॥७४

भोजन करि अचवाय मुख बसन परसि लहि बीर।
सिंहासन-आसीन छबि लखिहौं दोउ रसधीर ॥७५

मनिमय महल सुजगमगित सुचि सुरभित सब भाँति।
सहज सौज-संयुत सदा तहँ सजि सेज सुकाँति ॥७६

ललित लड़ैती लाल तहँ प्रीति-सहित पधराय।
लखिहौं मधुर मयंक-मुख मुख-सुखमा दृग-लाय ॥७७

सैन सुभग सजिहैं युगल हौं पलोटिहौं पाँय।
बार-बार निज भाग को अभिनन्दन करवाय ॥७८

चरन-चारु नख-कांति प्रिय अंक अमल उर-लाय।
सावधान सुख सेइहौं गुन अनूप धिय ध्याय ॥७९

राग-रंग-नृत्यादि निज नेहिन नेह-प्रसंग।
सुनिहौं श्रवन उछाह-सह विगत-विकार-कुरंग ॥८०

जामाधिक अवशेष सुचि समय सनेहिन हेत।
युगल ललन जागे परम पागे प्रेम समेत ॥८१

विमल सलिल सुरभित सुमुख धोय निचोल सवाँरि।
मेवा मधुर पवाय कब लखिहौं छवि उर-वारि ॥८२

अचमन कलित कराय कब बीरी दै मुखकंज ।
मुकुर मनोहर सुकर लै दरसैहौं छवि-मंज ।।८३

प्रीतमप्रिया प्रवीन प्रिय वदन परस्पर हेरि ।
अदा अजूब सराहि कब लखिहैं मोहि मुख फेरि ।।८४

सभासदन मधि नेहनिधि सकल सनेहिन मोद ।
देत यथारुचि कब लखब निज थल वलित विनोद ।।८५

सबहि तोषि सुन्दर सुखद सियप्यारी पुनि पास ।
ह्वै विपुल उमगाय मुद पीबत सुधा सुप्यास ।।८६

विशद-विनोद-विहार-हित उपवन सखिन समेत ।
सुमन सुफल निरखत कबहुँ लखिहौं मोद-निकेत ।।८७

हास-हुलास-उमंग उर गौर-श्याम अभिराम ।
हरित पीत तरुलतन तर कब लखिहौं छवि-धाम ।।८८

सरस सिकार-बिहार-रस राज-रंग-अनुकूल ।
अंग-अंग आलिन विंध्यो तकि ह्वैहैं भव-भूल ।।८९

रोम-रोम पुलकाइहौं ललित विनोद विलोकि ।
मधुर वचन-पीयूष प्रिय सुनिहौं चित-वृति रोकि ।।९०

सुभग सुमनमालाभरन नख-शिख प्रिय पहिराय ।
अंबक अमल अनूप फल कब लहिहौं नियराय ।।९१

साँझ समै श्रीसदन-मधि सुखमानिधि युग रूप ।
कबहुँ हेरिहौं हरन-हिय सजि जिय जौक अनूप ।।९२

गान-तान-सुखखान दुतिदार आरती मोद।
भोग-राग-उत्साह लखि ह्वैहै विपुल विनोद ॥९३

रासकुंज कमनीय शुभ सोम श्रवन वट-तीर।
रत्नाचल सरयू-पुलिन निकट रसन गंभीर ॥९४

महा-मोद-मंदिर-रहस अकथ - अनूप - अजूब।
शरद शशी शत-सहस सम सतत प्रकाश सुखूब ॥९५

फरस-फनूस-जलूस सब मनिमय दीप-प्रदीप।
ललित लता दश दिशि लसी नहि अति दूर-समीप ॥९६

नवल निकुंजन की कहाँ परमा कहौं निहारि।
लागत लघु बैकुण्ठ-वर-विपिन-विभव बलिहारि ॥९७

सुमन पंचरँग फल ललित पल्लव मृदु सब काल।
बड़भागी रागी लखहिं भूरुह रूप रसाल ॥९८

युगलानन्य अली कबहुँ उन तरु तरन समाज।
हेरि हिये हरखित मधुर सुचि सजिहैं रसराज ॥९९

देव-लोक-कन्या कलित नाग-कुमारी दिव्य।
नृप-कन्या तिमि गोपसुचि सुता सनेहिनि नव्य ॥१००

श्रीमिथिलापुर-वासिनी सिय-स्वामिनि प्रियआलि।
सखी-सहचरी-अनुचरी सकल सरस सुखसालि ॥१०१

अङ्ग-अङ्ग आभरन बर बसन रास-रस-जोग।
ललीलाल सजि सखिन सुख सौपन सुमन सुभोग ।१०२

अमित द्विजनि–तारेश–दुति–दमन करन–छवि खान।
सिंहासन मनिमय तहाँ बैठे युगल सुप्रान ॥१०३

निज-निज साज-समाज सब कृथसे सहित-सनेह।
गान करन लागी ललित तान बलित गुन–गेह ॥१०४

नटन–भाव दरसन बिसद बीन बजावन बेनु।
नाना गति ऊरध अरध मध्य गीत मुद–देनु ॥१०५

चंचल चखन नचाय चहुँओर नचन चितचोर।
युगल-किशोर रिझाय अलि पाइय प्रीति-पटोर ॥१०६

तिन प्रिय परिकर मधि कबहुँ हिलि मिलि परम प्रमोद।
अहो भाग कब पाइहौं विगत विकल्प बिनोद ॥१०७

आलिन–उर–उत्साह लखि–लली लाल मुदमाल।
मधुर मनोहर गान तिमि नटन ललित खुसहाल ॥१०८

करि अनूप विधि भरि हृदै उज्वल रस रमनीय।
युगलकिशोर उछाह-निधि सकल-कला-कमनीय ॥१०९

सखी सनेह सनी करैं वाह–वाह सुधि त्यागि।
तेहि सुख-सुधा-सबाद-मधि कब पसिहौं मति-पागि ॥११०

लोकालोक हरीशपुर भेदि पार तर तान।
अति अदभुत दोऊ सुघर सुख–समुद्र–गति–ज्ञान ॥११११

कर–कंजन–कल-कमल गहि नटन नागरिन-संग।
प्रिया प्रसन्न–निमित्त प्रिय रचत केलि बहु रंग ॥११२

श्रम-सीकर लखि वारि तन-मन-करि व्यजन रसाल।
सिंहासन पधराय छबि झाकन लगी सुबाल ।।११३

हौं तेहि समय सनेहसह युगल ललन दुतिरूप।
मृदु मुसुकानि अपांग प्रिय पेखि जीतिहौं जूप ।।११४

रास-रंग रतिरहस-सुख अङ्ग अतोल अमोल।
प्रियपरिकर-संवलित सजि सिय पिय-रूप-कलोल ।।११५

अति उत्साह अथाह हिय बरधन करि सखि स्वच्छ।
मधुर भोग आरति कलित किये लिये प्रिय पच्छ ।।११६

निरखि नैन-मद-मैन पर प्रेम समेत विचित्र।
नींद-व्याज आलस ललित युगलकिशोर समित्र ।।११७

सखिन सजायो सेज सुचि छीर-सार-सुकमार।
नवल निकुंज अजूब वर रचना रहस-अगार ।।११८

विविध सौंज-सुख-सजन श्रीश्यामाश्याम सुयोग।
अति अनूप अनुराग सजि सौंज सेजसम भोग ।।११९

ललीलाल मुदमाल यह आय जनाय सप्रीति।
चली लेवाय लगाय दृग दोउ दुति बीच सभीति ।।१२०

सुमग-माँझ कौतुक-कला प्रिय परिकर उत्साह।
नटन-गान मुदमय चमत्कार-हास-रसराह ।।१२१

अहो हरित बासर कबहुँ ह्वैहैं हिय हुलसाय।
बसिहौं सरस समाज-बिच चाहत चरित-निकाय ।।१२२

पल-पल प्रति बरवदन-विधु मधुरमरंद-पियूष।
पीबत तिल नहि तोषिहौं बटवैहौ भल भूष ॥१२३

नाना रंग समेत श्रीलली-लाल सुखपाल।
बैठि पधारे सैंन-सद-सदन शमन-श्रमशाल ॥१२४

सैन-सदन शोभा-सदन शशि दिनमनि शत स्वच्छ।
अहो सुदिन जब निरखिहौं निज सुनैन परतच्छ ॥१२५

अति अनूप पर्य्यंक मनि मधुर रचित रमनीय।
सकल सौज मुद मोद-घन-कारन कृत कमनीय ॥१२६

सखी सनेह समेत सुचि सेज सोहावन साजि।
ललीलाल पधराय तहँ निरखि रही रसराजि ॥१२७

रितु अनुकूल सुसौज तहँ कलित केलि-हित-रंग।
चहूँ ओर राखत भई सुमिरत सजन उमंग ॥१२८

बीनादिक बाजन विशद झीने सुरन समेत।
गाय-बजाय रिझाय अलि निरखहिं नेहनिकेत ॥१२९

युगल ललित लोने ललन सोहै सेज अनूप।
मोहै मन मनसिज सजे सुखमा सरस स्वरूप ॥१३०

अकथ कथा केहि विधि कथन होत विचारन योग!
युगल अनन्य अली तहाँ पावहिं प्रिय-दृग-भोग ॥१३१

अति अनुराग-विवस युगल जीवन-प्राण समान।
नवल नैन मूंदन लगे पगे प्यार रसखान ॥१३२

मधुर मंजरिन नैन सुठि सैंन पाय पट डारि।
सरस समाजन मिलि कबहुँ लखिहौं विमल विहारि ।।१३३

श्रीसियवल्लभ-सेज-सुख चिदविलास रमनीय।
निज निकुंज-अंतर सुमिर पैहौं कल कमनीय ।।१३४

अष्टयाम-उत्सव अमल उत्कंठाधिप धारि।
रहिहौं रसनिधि-धाम-मधि करन कलेवर बारि ।।१३५

शरद सुहावन समै लखि कलित कलाकर ब्योम।
कब सुधि-बुधि विन सुमिरिहौं रासरसिक मुख सोम।१३६

कलित केलि कातिक प्रिया प्रीतम द्यूत अनूप।
दीपमाल-युत जोहिहौं पगि उछाह रस भूप ।।१३७

कबहुँ इन्द्रमनि घन मधुर मोर कंठ दृग देखि।
विह्वल वपु ह्वैहों अहो सउ दिन सुभग सुबेखि ।।१३८

चंपक चामीकर चपल चपला नैन निहारि।
सिय स्वामिनि अङ्ग सुरति करि दैहौं गुनगन वारि।१३९

हिमऋतु युगलकिशोर चितचोर परस्पर रङ्ग।
प्रिय पट पहिरन प्यारयुत जोहि होइहौं दङ्ग ।।१४०

शिशिर वसंत सुपंचमी विमल विनोद विचित्र।
गान-तान सुनिहौं मधुर निरखत रूप पवित्र ।।१४१

होरी रसबोरी अमित गोरिन संग सुरंग।
सिय पिय जोरी जोहिहौं विपुल बढ़ाय उमंग ।।१४२

ललित लाड़िली जीतिहैं पिय यह होरी जंग।
हिय हरषित ह्वैहौं निरखि चखन चढ़ाय सुरंग ।।१४३

ऋतु वसंत कुन्जन कलित केलि विपिन उत्साह।
पिय प्यारी लखिहौं मधुर रस सागर मुद माँह ।१४४

ग्रीषमऋतु जल थल अमल केलि विचित्र विधान।
खसखाने बिच जोहिहौं युगल सुजीवन जान।।१४५

पावस ऋतु झूलन झमक सावन सरस निकुंज।
सखिन समेत विलोकिहौं युगल माधुरी मंज ।।१४६

झूलन लखि ललचाय चख चित्त सनेह सजाय।
झुलवैहौं दोऊ ललन नेह निशान बजाय।।१४७

सुगुन गान रसखान नित सुनि गैहौं सुधि त्यागी।
सोऊ सुदिन सोहाइहैं रहिहौं युग छवि पागि।।१४८

कबहुँ अटारी जाय युग जीवन सखिन समेत।
सरस सुघन लखिहौं सुछबि जोहत नेह निकेत।।१४९

कोटिन केलि कला कलित प्रति पल ऋतु अनुसार।
युगल ललन लोयन निरखि पैहौं शुचि शुखसार ।।१५०

अहोभाग दुख दाग बिन युगल सुराग दिमाग।
चित चितिहौं निशोत नित बिहरत धाम सुबाग।।१५१

सियवर शौक सुकौमुदी कब छिटकै मम हीय।
बार-बार उत्कंठ उर पुजवैहैं सिय-पिय ।।१५२

श्रीसिय पिय छवि रस सरस हिय अभिलाष सजाय ।
बसिहौं सदा सुधाममधि भवभय भान भजाय ।।१५३

भुक्ति मुक्ति चित चाह नहि आस अमल पन एक ।
धामवास सजि युगल छवि हेरत रहौं सटेक ।।१५४

मधुर मनोरथ करत कल रीझत राजकुमार ।
मिटत मोह ममता मलिन मान-महामद-मार ।।१५५

असत अबल अभिलाषहूँ कीजे सपनेहुँ नाहि ।
उभय लोक शत शोकसम देनहार द्रुतदाह ।।१५६

उज्वल उत्कंठा सुजन सुनि समुझे सब भाँति ।
श्रीसियपिय पावैं अवस नसैं विविध भव-भ्रांति ।।१५७

श्रीसरयूतट गुप्तहरि कुण्ड निर्मलीतीर ।
उज्वल उत्कंठा विमल विरच्यो शतसुख-शीर ।।१५८

लली लाल लीला ललित उतकंठा कमनीय ।
पढ़त सुनत मनगुनत ही सरसात रति रमनीय ।।१५९

श्रीसतगुरु साकेत सुचि नाम कृपा बल पाय ।
उज्वल उत्कंठा कलित रहस कह्यो सरसाय ।।१६०

श्रीयुगलानन्यशरण विरचितायां ललीलाल
लीलोत्कण्ठा पंचमो सामाप्तः